जागो फिर एक बार

सूर्यकांत त्रिपाठी “निराला”

डॉ . अनुरोज . टी . जे
विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
लिट्टील फ़्लवर महाविद्यालय
गुरुवायूर ,त्रिशूर [जिला], केरल

सूर्यकांत त्रिपाठी “निराला”

- जन्म :29 फरवरी 1896 [बंगाल के मेदिनापुर जिले की रियासत महिपादल में]
  निधन : 25 अक्टूबर 1961
- बच्चपन में ही माँ का निधन ।
- विवाह मनोहरा देवी से पाँच वर्ष के बाद महामारी के दौरान पत्नी की मृत्यु । एक बेटा – राम कृष्ण और बेटी सरोज़ ।
- 1935 की में बेटी सरोज़ का निधन,जिससे वे काफी मर्माहत हुए ।
- ‘सरोज़ स्मृति’ कविता इसी समय लिखी गयी । छायावाद के चार स्तंभों में एक है

प्रकाशित कृतियाँ

- ***काव्यसंग्रह***
- अनामिका(1923)
- परिमल(1930)
- गीतिका(1936)
- अनामिका (1939)
- तुलसीदास(1939)
- कुकुरमुत्ता(1942)
- बेला (1946)
- नये पत्ते (1946)
- अर्चना(1950)
- आराधना 91953)
- गीत कुंज (1954)

- **उपन्यास**
- अप्सरा (1931)
- अलका (1933)
- प्रभावती (1936)
- निरुपमा (1936)
- कुल्ली भाट (1938-39

- **कहानी संग्रह**
- लिली (1934)
- सखी (1935)
- सुकुल की बीवी (1941)

- **निबन्ध-आलोचना**
- रवीन्द्र कविता कानन (1929)
- प्रबंध पद्म (1934)
- प्रबंध प्रतिमा (1940)

- **बालोपयोगी साहित्य**
- भक्त ध्रुव (1926)
- भक्त प्रहलाद (1926)
- भीष्म (1926)

- **अनुवाद**
- रामचरितमानस (विनय-भाग)-1948 (खड़ीबोली हिन्दी में पद्यानुवाद)
- आनंद मठ (बाङ्ला से गद्यानुवाद)
- विष वृक्ष
- कृष्णकांत का वसीयतनामा
- कपालकुंडला

- **भाषा शैली**
- दो शैलियाँ स्पष्ट हैं-एक, उत्कृष्ट छायावादी गीतों में प्रयुक्त, लम्बी समस्त पदावलीयुक्त, तत्सम-बहुल , गहन विचारों से ओत-प्रोत **शैली** ।

दूसरी सरल, प्रवाहपूर्ण, प्रचलित उर्दू के शब्द लिए व्यंग्यपूर्ण और चुटीली **शैली**।

- निराला की भाषा भावानुरूप होने के साथ –साथ ध्वन्यात्मकता ,कोमलता और संगीतात्मकता जैसी गुणों से युक्त है ।

जागो फिर एक बार

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

- इस कविता में उस समय का वर्णन है, जब भारत अंग्रेजों के हाथों पराधीन था। इस कविता में कवि ने पराधीनता से निराश होकर भारतीय जन के लिये कुछ चिंतन किया है और सुप्त भारतीय जनता को उनके गौरवमयी अतीत की याद दिलाते हुए उन्हें जगाने का आह्वान किया है। कवि के अनुसार पराधीनता के उस युग में अनेक भारतीयों की अंतरात्मा सोई हुई थी। वे आलस्य और कायरता आदि से ग्रस्त थे और स्वयं को कमजोर व दीन-हीन मान चुके थे। वे चारों तरफ से निराश थे।

ऐसे में कवि ने इस कविता की रचना कर भारतीयों के अंदर देशप्रेम की भावना जगाकर जोश भरने का प्रयत्न किया है और उनकी कायरता की निंदा करते हुए उनकी अंतरात्मा को जगाने का प्रयास किया है। इस कविता में कवि ने देश-प्रेम की भावना को व्यक्त करते हुए अनेक महापुरुषों का उदाहरण देकर भारतीयों को जाग जाने के लिए प्रेरित किया है। इस तरह यह कविता एक प्रेरक कविता बन जाती है जो देश प्रेम को भूल बैठे भारतीयों के मन में देश प्रेम का भाव जगाने के लिए रचित की गई है।

जागो फिर एक बार – २

जागो फिर एक बार !
समर में अमर कर प्राण
गान गाये महासिन्धु-से
सिंधु – नद तीर – वासी !
सैन्धव तुरंगों पर
चतुरंग चमू संग
“सवा सवा लाख पर
एक को चढ़ाऊँगा

गोविंद सिंह निज
नाम जब कहाऊंगा” |
किसने सुनाया यह
वीर – जन – मोहन अति
दुर्जय , संग्राम – राग
फाग का खेला रण बारहों महीने में ?
शेरों की माँद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार |

सतश्री अकाल

भाल –अनल धक – धक कर जला ,

भस्म हो गया था काल –

तीनों गुण ताप त्रेय ,

अभय हो गए थे तुम

मृत्युंजय व्योमकेश के समान,

अमृत संतान ! तीव्र

भेदकर सप्तावरण – मरण लोक

शोकहारी ! पहुंचे थे वहां

जहां आसन है सहस्रार

जागो फिर एक बार |

सिंह की गोद से
छीनता रे शिशु कौन ?
मौन भी क्या रहती वह ,
रहते प्राण ? रे अजान !
एक मेषमाता ही
रहती है निर्निमेष –
दुर्बल वह –
छिनती संतान जब

जन्म पर अपने अभिशप्त
तप्त आँसू बहाती है ;
किन्तु क्या,
योग्य जन जीता है ।
पश्चिम की उक्ति नहीं
गीता है , गीता है
स्मरण करो बार – बार
जागो फिर एक बार।

पशु नहीं , वीर तुम
समर –शूर क्रूर नहीं
काल – चक्र में हो दबे
आज तुम राज कुंवर ! समर सरताज !
पर, क्या है ,
सब माया है – माया है ,
मुक्त हो सदा ही तुम ,
बाधा – बिहीन – बन्ध छन्द ज्यों ,
महामंत्र ऋषियों का

अणुओं - परमाणुओं में फूंका हुआ –
“तुम हो महान , तुम सदा हो महान ,
है नश्वर यह दीन भाव ,कायरता , कामपरता,
ब्रहम हो तुम ,
पद – रज भर भी है नहीं
पूरा यह विश्व भार”
जागो फिर एक बार ।
(‘परिमल’ से)

धन्यवाद